श्रीवानरगीता
निग्रहाचार्यविरचितं मर्कटभाष्यम्

भाष्यकारकृतं मङ्गलाचरणम्

जय जानकि जनकात्मजे रघुनाथचित्तविनोदिनि
जय भूमिजे जय वह्निजे खलदारिके वनचारिके |
जय रामवामविराजिते जय पुष्करेशविनाशिनि
जय भक्तवत्सनिमित्तधेनुकृतान्तमोहतरङ्गिणि ||

हे जनक की पुत्री जानकी ! रघुनाथ जी के चित्त को प्रसन्न करने वाली ! आपकी जय हो | हे भूमि एवं अग्नि से उत्पन्न ! खलों का नाश एवं वन में विचरण करने वाली ! आपकी जय हो | हे श्रीराम जी के बाएं भाग में स्थित ! पुष्कर द्वीप के सहस्रानन रावण को मारने वाली ! आपकी जय हो | हे भक्तरूपी बछड़ों के लिये कामधेनु के समान एवं मोह की तरंगों का नाश करने वाली !! आपकी जय हो |

रामेष्टमर्कबटुकं गन्धमादनशायिनम् |
सुग्रीवसचिवं रौद्रं वन्देऽहं मर्कटेश्वरम् ||

श्रीराम को अपना इष्ट मानने वाले, सूर्यदेव के शिष्य, गन्धमादन पर्वत पर निवास करने वाले, वानरराज सुग्रीव के मन्त्री, रुद्रावतार मर्कटेश्वर श्रीहनुमान् जी की मैं वन्दना करता हूँ |

पूर्वपीठिका

पराशर उवाच

श्रृणु मैत्रेय विप्रर्षे स्तोत्रं श्रीहनुमत्परम् |
कृतं सर्ववानरैश्च श्रीवानरगीताभिदम् ||०१||
स्तोत्रं सर्वोत्तमञ्चैव हनुमत्तत्वदर्शनम् |
सर्वमायाहरञ्चैव आधिव्याधिविनाशनम् ||०२||

मर्कटभाष्यम्

शक्तिपुत्रः पराशरो मैत्रेयं प्रत्युवाच विप्रर्षे ! परदेवतायाः श्रीहनुमतो वानरगीतेति नाम्ना प्रसिद्धं यत् स्तोत्रं परिकरैर्वानरैः पुरा प्रोक्तं तमहं वक्ष्ये | हनुमतस्तात्त्विकस्वरूपस्य दर्शनहेतुभूतमिदं सर्वोत्तमं स्तोत्रं सर्वमायाहरमायाधिव्याधिविनाशदक्षमाचक्षे |
कीदृशी माया ?
विचित्रकार्यकरणा अचिन्तितफलप्रदा |
स्वप्नेन्द्रजालवल्लोके माया तेन प्रकीर्तिता || (देवीपुराणे)
तस्यास्तु मानवी, दैवी, आसुरी, ब्राह्मी, वैष्णवी प्रभृतयो भेदाः | सर्वमायाहरणे यः समर्थस्स सर्वमायाहरः | मनसि स्थिता पीडा आधिरिति कथ्यते, यदा रोगैर्मनःपीडा दैहिककष्टरूपैः सन्तापयति तदा व्याधिरिति प्रोच्यते |
द्विविधो जायते व्याधिः शारीरो मानसस्तथा || (महाभारते)
स्तोत्रमेतज्जनः पठित्वा आधिव्याधिविनिर्मुक्तो भूत्वा भूतले चरति |

शक्तिपुत्र पराशर ने मैत्रेय को कहा, हे विप्रों में ऋषितुल्य ! परमदेवता श्रीहनुमान् जी की स्तुति में उनके सेवक वानरों ने जो वानरगीता के नाम से स्तोत्र कहा था, उसे कहता हूँ, सुनो | हनुमान् जी के तात्विकस्वरूप का दर्शन कराने सहायक यह

सर्वोत्तम स्तोत्र सभी प्रकार की माया का हरण करने में, आधि एवं व्याधि का विनाश करने में कुशल है, मैं इसे कहता हूँ | माया कैसी होती है ? विचित्र कार्यों को करने वाली, अकल्पनीय वस्तुओं की प्राप्ति कराने वाली, स्वप्न या इंद्रजाल के समान (असत्य को भी सत्य के समान) प्रदर्शित करने वाली को माया कहते हैं, ऐसा देवीपुराण का वचन है | इसके मानवी, दैवी, आसुरी, ब्राह्मी, वैष्णवी आदि भेद होते हैं | इन सभी प्रकार की माया का हरण करने में यह स्तोत्र समर्थ है | मन की पीड़ा, मानसिक अवसाद को आधि कहते हैं | जब मानसिक पीड़ा से भौतिक शरीर में भी रोगजन्य कष्ट होने लगे तो उसे व्याधि कहते हैं | शारीरिक एवं मानसिक, दो प्रकार से व्याधि उत्पन्न होती है, ऐसा महाभारत का वचन है | इस स्तोत्र को पढने से व्यक्ति आधि-व्याधि से मुक्त हो, पृथ्वी पर विचरण करता है |

अगस्त्येन पुरा प्रोक्तं सर्वेषां मुनिसन्निधौ |
इन्द्रेण याचितश्चैतल्लोकोपकरणेच्छया ||०३||

* पाठभेदः - याचितेनैव

इन्द्रोऽथ परिपप्रच्छ सत्कृतं मुनिपुङ्गवम् |
अगस्त्यञ्च महात्मानमासीनञ्च सुखासने ||०४||

* पाठभेदः – मुनिपुङ्गव (मैत्रेयं प्रति)

देवदेव भवाम्भोधेः दुस्तरात्कलुषेन्द्रियाः |
जनाः कथं तरन्तीह तन्मे वद कृपानिधे ||०५||

मर्कटभाष्यम्

इदं वानरगीताख्यस्तोत्रं पुराकाले मुनिभिरालोकितोऽगस्त्यो देवराजप्रार्थितो भूत्वा लोकानामनुकम्पार्थमुपदिष्टवान् | सुखासने आसीनमगस्त्यं महात्मानं विधिना सत्कार्य इन्द्रः पप्रच्छ यद्देवदेव ! पापात्मानः कलुषावृत्तचित्ता जनाः

दुस्तरं भवरूपिणं सागरं कथं तरन्ति तन्मे वद यतस्त्वं कृपानिधिरसि | सुखासने जनः शान्तभावं प्रदर्शयति यथा वास्तुसूत्रोपनिषदि षष्ठप्रपाठके - सुखासनं रूपस्य शान्तभावं प्रददाति |

यह वानरगीता नामक स्तोत्र पूर्वकाल में मुनियों से घिरे, सुशोभित, अगस्त्य जी ने देवराज के द्वारा प्रार्थना करने पर संसार के ऊपर कृपा करने के उद्देश्य से उपदेश किया था | सुखासन में बैठे हुए महात्मा अगस्त्य का विधिपूर्वक सत्कार करके इन्द्रदेव ने पूछा - हे देवताओं के भी आराध्य ! पाप में ही जिनका मन लगता हो, जिनकी इन्द्रियां पाप के कारण मैली हो गयी हों, ऐसे लोग भी इस, कठिनाई से पार किये जाने वाले भवसागर को कैसे पार कर सकते हैं, यह आप मुझे बताएक्योंकि आप कृपा के भण्डार हैं | सुखासन में बैठा व्यक्ति शान्तभाव का प्रदर्शन करता है, उसके रूप को सुखासन से शान्ति प्राप्त होती है, ऐसा वास्तुसूत्रोपनिषत् के छठे प्रपाठक का वचन है |

अगस्त्य उवाच

हनूमतः कृतं स्तोत्रं वानरैर्विमलात्मभिः |
पठन्ति ये सदा मर्त्याः तच्चित्ता विमलात्मकाः ||०६||

* पाठभेदः - हनूमन्तं

तरन्ति भवपारोधिं प्राप्नुवन्ति हरेः पदम् |
आयुः कीर्तिर्यशश्चैव लभन्ते नात्र संशयः ||०७||

मर्कटभाष्यम्

यस्याचरणे धर्मबाहुल्यतास्ति स धर्मप्रभावेण विमलात्मा
एतादृशैर्विमलात्मभिर्वानरैर्हनूमतो यत् स्तोत्रं कृतं तं पठित्वा तच्चित्ता-

हनुमच्चित्ता विमलात्मानो मर्त्या भवसागरस्य पारं गन्तुं शक्नुवन्ति, श्रीहरेः पादारविन्दतलस्थिताः मोक्षभागिनो भवन्तीह लोके चाप्यायुः कीर्तिं यशोवर्द्धनादिकं लभन्तेऽत्र संशयो नास्तीति अगस्त्योक्तिः |

जिसके आचरण में धर्म की अधिकता हो, वह धर्म के प्रभाव से विमलात्मा होता है | ऐसे विमलात्मा वानरों के द्वारा हनुमान् जी का जो स्तोत्र बनाया गया, उसे पढ़कर, उसमें मन लगाकर, हनुमान् जी में मन को लगाकर विमलात्मा मनुष्य भवसागर के पार जाने में सक्षम हो जाते हैं | भगवान् विष्णु के चरणकमलों के नीचे स्थित होकर (चरणों का आश्रय ग्रहण करके) मोक्ष के अधिकारी बन जाते हैं | इस संसार में रहते हुए भी उन्हें उचित आयु, कीर्ति, यशोवृद्धि आदि की प्राप्ति होती है, इसमें संशय नहीं है, ऐसा अगस्त्य ऋषि ने कहा |

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीवानरगीतास्तोत्रमन्त्रस्य अगस्त्यो भगवानृषिः, जगतीच्छन्दः, श्रीहनुमान् देवता मारुतात्मज इति बीजम्, अञ्जनासूनुरिति शक्तिः, वायुपुत्र इति कीलकं, श्रीहनुमत्प्रसादसिद्ध्यर्थे विनियोगः ||

ध्यानम्

वामे जानुनि वामजानुमपरे ज्ञानाख्यमुद्रान्वितः
हृद्देशे कलयन्नुतो मुनिगणैरध्यात्मदक्षेक्षणः |
आसीनः कदलीवने मणिमये बालार्ककोटिप्रभः
ध्यायन् ब्रह्म परं करोतु मनसा शुद्धिं हनूमान्मम ||

सञ्जीव पर्वतोद्धार मनोदुःखं निवारय |
प्रसीद सुमहाबाहो त्रायस्व हरिसत्तम ||

* पाठभेदः – सञ्जीवपर्वतोद्धार

मर्कटभाष्यम्

'वा' गतिगन्धनयोर्वातीत्यप्रतिहतगतिस्सर्वदा सुप्रकाशितस्तस्माद्वामो सूर्यस्तस्यात्मजां वामजां सुवर्चलामनुगतां वामे जानुनि सन्धार्य तथापरे (दक्षिणे) ज्ञानमुद्रां प्रदर्शयन् हृद्देशे स्वेष्टनाम कलयनध्यात्मदर्शने निपुणः स हनूमान् मुनिगणैराराधितो राजते | यथा सौगन्धिकानुसन्धाने वातात्मजो वृकोदरः कदलीवने हनुमन्तं ददर्श -

कदलीवनमध्यस्थमथ पीने शिलातले |
ददर्श सुमहाबाहुर्वानराधिपतिं तदा || (महाभारते)

कदलीवने मणिमये शिलासने
नूतनोदितभास्करपरिधिसन्निभोऽथवानन्तसूर्यसमप्रभो ब्रह्मध्यानपरो भूत्वा मनसा मम शुद्धिं करोत्विति ध्यायेत् | तत्परं हे पर्वतोद्धार ! सञ्जीव | इति मूर्तिषु चित्रे पिण्डे वा इष्टप्रतिष्ठाकाङ्क्षया सञ्जीवनाय प्रार्थयेदथवा पूर्वप्रतिष्ठितेषु सञ्जीवनौषधान्वितं पर्वतमुत्पाटयामासेति विचिन्त्य सञ्जीवपर्वतोद्धार इति सम्बोधयेत् |

मनोबुद्धिरहङ्कारो जीवस्य सहकारिणः ||
स्वकर्मवशतस्तात फलभोक्तार एव ते |
सर्वं वैषयिकं तात सुखं वा दुःखमेव वा || (महाभागवते)

तथा च

मनः करोति पापानि मनो लिप्येत पातकैः | (ज्ञानसङ्कलिनीतन्त्रे)

तस्माद्मनोदुःखं निवारय रक्ष इति याचयेत् |

'वा' शब्द से गति एवं प्रकाशन का बोध होता है, अतएव किसी के भी द्वारा जिनकी गति अवरुद्ध नहीं होती, जो सदैव प्रकाशित रहते हैं, ऐसे सूर्यदेव को वाम कहते हैं तथा उनके अंश से उत्पन्न देवी सुवर्चला को वामजा कहते हैं | सुवर्चला हनुमान् जी की भार्या होने से उनकी अनुगामिनी होकर उनके बायें जानुभाग में स्थित हैं | हनुमान् जी ने अपने दूसरे (दाहिने) जानुभाग में ज्ञानमुद्रा का आश्रय लिया है एवं वे अपने हृदय में (राम) इष्टनाम का मधुर स्मरण कर रहे हैं | अध्यात्मतत्व का साक्षात्कार करने में निपुण हनुमान् जी का बड़े बड़े मुनिगण अभिवादन कर रहे हैं | सौगन्धिक पुष्पों की खोज में निकले हुए वायुपुत्र वृकोदर भीमसेन ने हनुमान् जी को कदलीवन में देखा था - 'कदलीवन के बीच में स्थित एक सुन्दर शिला पर महाबाहु भीम ने वानरों के स्वामी हनुमान् जी का दर्शन किया' ऐसा महाभारत का वचन है |

कदलीवन में मणिमय आसन पर विराजमान, प्रातःकाल के उदीयमान सूर्य की परिधि के समान प्रभा वाले, अथवा अनन्त सूर्यों के समान तेजस्विता वाले, ब्रह्मध्यान में रत हनुमान् जी मानसिक कृपा के द्वारा मेरी शुद्धि करें | इसके बाद, हे पर्वत को धारण करने वाले ! आप चैतन्य हो जायें, ऐसा मूर्ति, चित्र अथवा पिण्ड आदि में अपने इष्ट की प्रतिष्ठा हेतु प्रार्थना करे | पूर्वप्रतिष्ठित मूर्ति आदि में, 'हे संजीवनी बूटी से सम्पन्न पर्वत को उखाड़ कर धारण करने वाले' ऐसा सम्बोधन करे | महाभागवत का वचन है कि मन, बुद्धि एवं अहंकार, ये जीव के सहयोगी बनकर अपने अपने कर्मों का उपभोग स्वयं ही करते हैं | भौतिक विषयजन्य सुख एवं दुःख का उपभोग यही करते हैं | साथ ही, मन ही पाप करता है एवं पातक से लिप्त होता है, ऐसा ज्ञानसंकलिनीतन्त्र का वचन है | अतएव हनुमान् जी से मानसिक दुःख का

निवारण एवं अपनी रक्षा के उद्देश्य से प्रार्थना करनी चाहिये |

श्रीसुग्रीवः

सुवर्णशैलस्य गवाञ्चकोटिशतस्य कोटेश्च शतस्य यच्च |
दानस्य नैवास्ति समं फलञ्च ध्रुवञ्च तन्मारुतिदर्शनेन ||०१||

मर्कटभाष्यम्

यो जनस्सुवर्णमयं पर्वतं तथाथवा शतकोटिसङ्ख्यापरिमितां गामथवा शतसंख्यकानि दुर्गाणि ददाति तद्दानस्य फलं मारुतात्मजस्य हनूमतो दर्शनफलसममपि न भवेदिति ध्रुवम् |

जो व्यक्ति सोने से बना पर्वत दान कर दे, एवं-अथवा सौ करोड की संख्या में गोदान करे अथवा सौ दुर्गों (किलों) का दान करे, तो भी वायुपुत्र हनुमान् जी के दर्शन का जो पुण्यफल है, उसके समान उस दान का फल नहीं हो पाता है, यह निश्चित है |

श्रीगन्धमादनः

हनुमन्निति मे स्नानं हनुमन्निति मे जपः |
हनुमन्निति मे ध्यानं हनुमत्कीर्तनं सदा ||०२||

मर्कटभाष्यम्

स्नानेन बाह्यमलमपसरति, जपादिन्द्रियशोधनं भवति, ध्यानेन चित्तनिर्मलीकरणं भवति, कीर्तनादुद्धारश्च | सर्वमेतद्धनुमदाज्ञया हनुमतः प्रीतये करोमीति चिन्तयेत् |

स्नान से शरीर के बाहरी मल का परित्याग होता है | जप से इन्द्रियों की शुद्धि होती है तथा ध्यान से चित्त की निर्मलता होती है | इष्ट का संकीर्तन उद्धार करता है | ये सब कुछ मैं हनुमान् जी की आज्ञा से उनकी ही प्रसन्नता के लिए कर रहा हूँ, ऐसा विचार करना चाहिये |

श्रीसुषेणः

रामभक्तचरिताकथामृतं वायुतनयगुणानुकीर्तनम् |
रामदास तव पादसेवनं सम्भवन्तु मम जन्मजन्मनि ||०३||

मर्कटभाष्यम्

रामभक्तचरितस्य कथाकर्णपीयूषं वातात्मजस्य गुणानामनुकीर्तनं तस्य समर्चनं कैङ्कर्यमपि मम जन्मजन्मान्तरे भवेदिति (प्रार्थनां कुर्यात्) |

रामभक्त हनुमान् जी की चरित्रकथा का कर्णामृत, वायुपुत्र के गुणों का संकीर्तन एवं उनकी सेवा का सौभाग्य मुझे जन्म-जन्मान्तर तक प्राप्त होता रहे, ऐसी प्रार्थना करे |

श्रीअङ्गदः

माता सुवर्चला देवी पिता मे वायुनन्दनः |
बान्धवा हनुमद्भक्ताः स्वदेशो भुवनत्रयम् ||०४||

मर्कटभाष्यम्

अत्र हनुमदाचारानुरूपं विश्वबन्धुत्वमाह | मम माता सूर्यात्मजा कपिजाया सुवर्चला देवी वायुनन्दनश्च पितास्ति | ये जना हनुमद्भक्तास्ते सर्वे मम बान्धवा भवेयुर्हनुमत्तत्त्वदर्शनाद्भुवनत्रयं स्वदेशमिव लभ्यत इति साधकस्य सच्चिन्ता |

यहाँ पर हनुमदाचार के अनुसार विश्वबन्धुत्व को कहा गया है | मेरी माता सूर्यपुत्री एवं हनुमान् जी की पत्नी देवी सुवर्चला हैं तथा मेरे पिता वायुनंदन हनुमान् हैं | जो लोग हनुमान् जी के भक्त हैं वे सभी मेरे स्वजन हों | सर्वत्र हनुमान् जी के तात्त्विक स्वरूप का दर्शन करने से तीनों लोक मेरे लिए स्वदेश के समान हैं, ऐसा सद्विचार साधक को करना चाहिये |

श्रीनीलः

भक्तकल्पतरुं सौम्यं लोकोत्तरगुणाकरम् |
सुवर्चलापतिं वन्दे मारुतिं वरदं सदा ||०५||

मर्कटभाष्यम्

यो देवद्रुमवदुदारभावाद्भक्तानामभीष्टफलं ददाति, सुन्दराकृतिरस्ति, लोकोत्तरामानुषादैवकर्मकर्तृत्वशक्त्याप्लुतानां गुणानामागरोऽस्ति तमीप्सितप्रदं वायुनन्दनं सुवर्चलाकान्तमहं सदा वन्दे |

जो अपने भक्तों को कल्पवृक्ष के समान उदारभाव से अभीष्ट फल प्रदान करते हैं, सुन्दर स्वरूप वाले हैं, सांसारिक मनुष्यों एवं देवताओं की क्षमता से परे कर्म को करने की शक्ति से परिपूर्ण गुणों के भण्डार हैं, उन अभीष्टफलदायी वायुपुत्र, सुवर्चलापति का मैं सदैव वंदन करता हूँ |

श्रीगवाक्षः

वायुपुत्रेण महता यद्यदुक्तं करोमि तत् |
न जानामि ततो धर्मं मद्धर्मं रक्ष मां सदा ||०६||

मर्कटभाष्यम्

महद्भिर्गुणैर्वेष्टितो यद्वायुपुत्रस्तदाज्ञयायन्निर्देशितं तत्तदेव करोमि | परतरङ्किञ्चिदपि न जाने तस्माद्भो देव ! मद्धर्मं सर्वदा रक्ष यतस्त्वमेव मम निर्देशकोऽसि |

महान् गुणों से परिपूर्ण जो वायुपुत्र हैं, उनकी आज्ञा से जो निर्दिष्ट होता है, मैं वही करता हूँ | इससे अतिरिक्त मैं कुछ नहीं जानता, इसीलिए हे देव ! आप मेरे धर्म की रक्षा करें क्योंकि आप ही मेरे निर्देशक हैं |

श्रीमैन्दः

समीरसूते सततं त्वदाज्ञया त्वदंशकः प्रेरितमानसेन्द्रियः |
करोम्यहं यच्च शुभाशुभं प्रभो त्वत्प्रीतये मत्कृतमस्तु तत्सदा ||०७||

मर्कटभाष्यम्

वायुनन्दन ! त्वदाज्ञया त्वच्छक्त्यंशभूतोऽहं तवैव प्रेरणया चलितेन्द्रियमानसो भूत्वा यत्किञ्चिदपि शुभाशुभं करोमि तत्सर्वं त्वत्प्रसादाय भवेदिति कामये |

हे वायुपुत्र ! आपकी आज्ञा से, आपकी ही शक्ति से युक्त होकर हैं, आपकी ही प्रेरणा से संचालित होने वाली इन्द्रियों एवं मन वाला होकर जो कुछ भी शुभ या अशुभ कर्म करता हूँ, वह आपकी प्रसन्नता के लिए ही हो, ऐसी कामना है |

श्रीद्विविदः

रामादीनां रणे ख्यातिं दातुं यो रावणादिकान् |
नावधीत् स्वयमेवैकस्तं वन्दे हनुमत्प्रभुम् ||०८||

मर्कटभाष्यम्

रावणकुम्भकर्णातिकायप्रभृतिवीरमर्दनकर्मणि सामर्थ्ये सत्यपि
यस्तान्रामप्रतापसंस्थापनेच्छया स्वयमेव नावधीत्तं हनुमन्तं प्रभुं वन्दे |

रावण, कुम्भकर्ण, अतिकाय आदि वीरों को मारने में समर्थ होते हुए भी जिन्होंने रामजी के प्रताप की स्थापना की इच्छा से उन्हें स्वयं नहीं मारा, उन हनुमान् संज्ञक स्वामी की मैं वंदना करता हूँ |

श्रीशरभः

भौमस्य वासरे पूजा कर्तव्या हनुमत्प्रभोः |
भवेत्स शुचिरायुश्श्रीःपुत्रमित्रकलत्रवान् ||०९||

मर्कटभाष्यम्

सूर्योदये यदा भौमस्य होरा भवति तस्मिन् भौमवासरे हनुमद्देवतायाः पूजा कर्तव्या | विधानेनानेन याजकः शुचितां दीर्घायुषमैश्वर्यं सखासुतजायादिकान् प्राप्नोति |

मंगलवार को (जिस दिन सूर्योदय में मङ्गल की होरा पडे) हनुमान् जी की पूजा करनी चाहिये | इस प्रकार करने पर पूजन करने वाला व्यक्ति पवित्रता, लम्बी आयु, सम्पत्ति, सन्तान, मित्र एवं स्त्री को प्राप्त करता है |

श्रीगवयः

आमिषीकृतमार्ताण्डं गोष्पदीकृतसागरम् |
तृणीकृतदशग्रीवमाञ्जनेयं नमाम्यहम् ||१०||

मर्कटभाष्यम्

मृतेऽण्डे वसति मृताण्डस्याधिष्ठाता वा मार्तण्डः सूर्यस्तं भक्ष्यमिव यो बभक्ष, येन दुर्लङ्घ्यसिन्ध्वपि धेनुखुरक्षुण्णावनति इव लङ्घितः कैलासोत्थापकमन्तकत्रासकर्तारमद्भुतकर्माणं रावणमपि यः स्ववीर्येण तृणवन्ममर्द तमञ्जनागर्भसम्भूतमाञ्जनेयं नौमि |

जो निर्जीव पिण्ड में निवास करे अथवा निर्जीव पिण्ड का स्वामी हो वह मार्तण्ड सूर्य है | उस सूर्य को जिन्होंने भोजन के समान भक्षण कर लिया, जिनके द्वारा कठिनाई से लांघा जाने वाला समुद्र भी गाय के खुर से बने गड्ढे के समान लांघ दिया गया, कैलास पर्वत को उठाने एवं यमराज को भी भयभीत करने जैसे अद्भुत कर्मों वाले दशानन रावण को भी जिन्होंने अपने पराक्रम से तिनके के समान रौंद दिया, उन अञ्जना के गर्भ से उत्पन्न आञ्जनेय हनुमान् जी को मैं प्रणाम करता हूँ |

श्रीप्रहस्तः

उल्लङ्घ्य सिन्धोस्सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः |
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ||११||

*पाठभेदः - यच्छोकवह्निं

मर्कटभाष्यम्

यथा बालः क्रीडारतो लघूपक्रमेणैवोत्पतति तथा स्वलीलया वारिधिं लङ्घयित्वा सीतायाः श्रीरामवियोगजन्यानलं संगृह्य लङ्कां संदीपयाञ्चकार तमञ्जनासूनुं बद्धाञ्जलिना नमामि |

जैसे कोई बालक खेलते हुए बिना परिश्रम के ही उछलता है, वैसे ही जिन्होंने अपनी लीला से समुद्र को लांघकर श्रीरामविरह से उत्पन्न सीताजी की विरहाग्नि को लेकर लंका को जला दिया, उन अंजनापुत्र को मैं हाथ जोडकर प्रणाम करता हूँ |

श्रीनलः

नमाम्यहं वायुजपादपङ्कजं करोमि तद्वायुजपूजनं सदा |
वदामि वातात्मजनाममङ्गलं स्मरामि वायोर्भवकीर्तनं शुभम् ||१२||

मर्कटभाष्यम्

वायुपुत्रस्य हनुमतश्चरणारविन्दौ नमामि | तस्यैवार्चनं करोमि, तस्य मङ्गलकरन्नाम वदामि | तस्य लीलाचरित्रगुणानुकीर्तनं करोमीति वाङ्मनोकायेन्द्रियैरनिलात्मजपरोऽस्मि |

वायुपुत्र हनुमान् जी के चरणकमलों को प्रणाम करता हूँ | उनकी ही पूजा करता हूँ उनके मंगलकारी नामों को बोलता हूँ | उनके लीलाचरित्र के गुणों का कीर्तन करता हूँ, इस प्रकार से वाणी, मन, शरीर एवं इन्द्रियों के द्वारा वायुनंदन की ही शरण में हूँ |

श्रीधर्मकः

सप्तषष्टिर्हतान्कोटिवानराणां तरस्विनाम् |
यस्सञ्जीवनयामास तं वन्दे मारुतात्मजम् ||१३||

मर्कटभाष्यम्

रौद्रकर्मणा मेघनादेन कूटयुद्धे सप्तषष्टिकोटिमर्कटा हतास्तान्यो

सञ्जीवनौषधान्यानयित्वा पुनर्जीवितानकरोत्तं मारुतात्मजं वन्दे |

भयानक कर्म करने मेघनाद के द्वारा छलयुद्ध में सडसठ करोड़ वानर मारे गए थे | उन सबों को संजीवनी औषधि लाकर जिन्होंने पुनर्जीवित कर दिया उन वायुपुत्र को मैं प्रणाम करता हूँ |

श्रीगजः

तनौ बालपाशः पिता पार्वतीशस्स्फुरद्बाहुदण्डौ मुखे वज्रदंष्ट्रा |
सती चाञ्जना यस्य माता ततोऽन्यं न जाने न जाने न जाने न जाने ||१४||

मर्कटभाष्यम्

केशाप्लुतकलेवरो हनुमत्तनू रुद्रांशन्यायेन तस्य पिता गिरिजापतिः | स विशालदोर्दण्डयुक्तो वज्रभीषणान्दंष्ट्रानास्ये धत्ते | तस्य जननी पातिव्रत्यसम्पन्नाञ्जना चास्ति | तत्परमन्यं वा कमपि न जाने निश्चितार्थं पुनरावृत्तिः |

हनुमान् जी का शरीर रोमावलियों से भरा हुआ है | रुद्रांश होने से उनके पिता गिरिजापति शिव हैं | वे विशाल भुजाओं से युक्त हैं तथा मुख में वज्र के समान भीषण दांतों को धारण करते हैं | उनकी माता पतिव्रता अंजना हैं | उनके अतिरिक्त मैं किसी और को नहीं जानता हूँ | (इस बात की पुनरावृत्ति इस अर्थ की पुष्टि करती है)

श्रीऋक्षरजस्

बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वमरोगता |
अजाड्यं वाक्पटुत्वञ्च हनुमत्स्मरणाद्भवेत् ||१५||

मर्कटभाष्यम्

अत्र हनुमन्नामस्मरणप्रभाववर्णनम् | 'यदा निश्चिनुते तदा सा स्याद्बुद्धिसंज्ञा' इति प्रपञ्चसारे शङ्करोक्तिः | निर्णयाधिकारिभिर्बुद्धिर्गरीयसी मान्या | स्वतन्त्रकर्मेच्छाशक्तेर्नाम चेतना | तदभावं जडता जाड्यं वा तदभावमजाड्यञ्चेतना वा | सत्वादिगुणजन्यवृत्तीनां धारणाशक्तेर्नाम धृतिः तद्भावं धैर्यम् | हनुमतः स्मरणेन जनो बुद्धिं दैहिकं बलं धैर्यं भयहीनतां स्वास्थ्यलाभमजाड्यं वाक्चातुर्यञ्च प्राप्नोति |

यहाँ हनुमान् जी के नामस्मरण का प्रभाव वर्णित है | 'जब वह निश्चय करती है तो बुद्धि कहाती है', ऐसा प्रपञ्चसारतन्त्र में श्रीशंकराचार्य का वचन है | निर्णय करने के अधिकार से युक्त तत्वों ने बुद्धि को श्रेष्ठ माना है | स्वतन्त्रकर्म एवं इच्छाशक्ति का नाम चेतना है | चेतना का अभाव जड़ता अथवा जाड्य है, जाड्य का अभाव अजाड्य या चेतना है | सत्वादि गुणों से उत्पन्न वृत्तियों की धारणाशक्ति का नाम धृति है जिसका भाव धैर्य है | हनुमान् जी के स्मरण से व्यक्ति बुद्धि, शारीरिक बल, धैर्य, निर्भयता, स्वास्थ्यलाभ, जडता से हीन एवं वाणी में चतुरता को प्राप्त करता है |

श्रीसम्पातिः

सीताशोकस्य नाशाय श्रीरामे शोकनाशनम् |
साधकानां सुखं धन्यं वायुसूनुं नमाम्यहम् ||१६||

मर्कटभाष्यम्

शिन्शिपातरुमूले स्थितायाः श्रीरामवियोगाक्रान्तसीतायाः शोकनाशनहेतुभूतम्, सीतानुसन्धानसाफल्येन लक्ष्मणसञ्जीवनकर्मणा चापि

श्रीरामशोकशमनहेतुभूतम्, साधकानां सुखकर्तारं धन्यजीवनं वायुपुत्रं नमामि |

अशोकवृक्ष के नीचे बैठी हुई श्रीरामजी के वियोग से कष्ट पाती हुई सीता जी के शोक का जिन्होंने नाश किया, सीताजी की खोज में सफल होकर तथा लक्ष्मण के पुनर्जीवन आदि कर्म के द्वारा जिन्होंने श्रीरामजी के शोक का शमन किया, साधकों को सुखी करने वाले, जिनका जीवन धन्य है, ऐसे वायुपुत्र को मैं प्रणाम करता हूँ |

श्रीवेगवान्

अञ्जनावरपुत्राय रामेष्टाय हनूमते |
सर्वलोकैकवीराय भविष्यद्ब्रह्मणे नमः ||१७||

मर्कटभाष्यम्

धृतिमान्गतिमाँश्चैव केतुमाञ्छ्रुतिमाँस्तथा | मतिमान्हनुमानेते केसरीसूनवः स्मृताः || तेषु हनुमान् श्रेष्ठस्तस्मात्तस्मै नमः | यस्य राम इष्टो यो रामस्येष्टश्च स रामेष्टः | सर्वेषु लोकेषु यस्य वीरताप्रतिहता स सर्वलोकैकवीरः | श्रीरामोपकारकर्मणा रामदत्तवरेण हनुमान् सर्वहितार्थाय ब्रह्मलोकाधिपो बभूव | प्रतिकल्पं हनुमदंशसम्पन्नो धाता जायत इति पाराशरीयं मतम्, तस्माद्धनुमान् भविष्यद्ब्रह्म इति ख्यातस्तस्मै भविष्यद्ब्रह्मणे नमः |

धृतिमान्, गतिमान्, केतुमान्, श्रुतिमान्, मतिमान् एवं हनुमान्, ये केसरी के पुत्र कहे गये हैं, जिनमें हनुमान् श्रेष्ठ हैं अतएव उन्हें प्रणाम है | राम जिनके इष्ट हैं तथा जो राम के इष्ट हैं, वह रामेष्ट हैं | सभी लोकों में जिनकी वीरता अवरुद्ध नहीं होती, वह सर्वलोकैकवीर हैं | श्रीराम के प्रति उपकार के कारण रामजी के द्वारा दिए गए वरदान से हनुमान् जी सबों के हित के लिए ब्रह्मलोक के स्वामी हुए | प्रत्येक कल्प में ब्रह्मा हनुमान् के अंश से सम्पन्न

होते हैं ऐसा पराशर का मत है, अतएव हनुमान् जी भविष्यद्ब्रह्म के नाम से विख्यात हुए, उन भविष्यद्ब्रह्म के लिए प्रणाम है |

श्रीरुन्ध्रग्रीवः

हनुमत्सदृशं दैवं नास्ति नास्तीति भूतले |
तं पूजयन्ति सततं ब्रह्मगौरीमहेश्वराः ||१८||

मर्कटभाष्यम्

अचिन्त्यकर्मा हनुमान् संसारेऽतुल्योऽस्ति | स पराशरमतानुसारं त्रिदेवांशावतारः | दिव्यलोकेषु च तं कपीश्वरं सर्वज्ञानविज्ञानबलैश्वर्यसम्पन्नं ज्ञात्वा लोकपितामहो गौरी शिवश्च पूजयन्ति | उमाशङ्करयोर्योगस्य विष्णुसंज्ञेति रुद्रहृदयश्रुतिकथनम् | तस्माद्धनुमान् विष्णुपूज्यश्च यथा तस्य सहस्रनाम्नः पूर्वपीठिकायां श्रीरामस्य हनुमदुपासना वर्णिता |

जो सामान्य जनों के लिए अकल्पनीय हैं, ऐसे कर्मों को करने वाले हनुमान् जी की तुलना में पूरे संसार में कोई भी नहीं है | पराशर ऋषि के मत से वे त्रिदेवों के अवतार हैं | उन्हें सभी प्रकार के ज्ञान, विज्ञानं, बल एवं ऐश्वर्य से युक्त जानकर दिव्यलोकों में संसारप्रवर्तक प्रजापतियों के भी पिता ब्रह्मदेव, गौरी एवं शिव पूजन करते हैं | उमा एवं शङ्कर जब एकाकार होते हैं तो विष्णु कहाते हैं, ऐसा रुद्रहृदयोपनिषत् का कथन है | अतएव हनुमान् जी विष्णु भगवान् के भी पूज्य हैं | उनके सहस्रनाम की पूर्वपीठिका में श्रीराम जी के द्वारा हनुमद्देव की उपासना का वर्णन है |

श्रीदधिमुखः

आलोड्य वेदशास्त्राणि सर्वाण्यपि महर्षिभिः |
इदमेकं सुनिर्णीतं न दैवं हनुमत्परम् ||१९||

मर्कटभाष्यम्

ऋषयो मन्त्रद्रष्टारस्तेभ्यो ये महत्तरास्ते महर्षयस्तैः
शास्त्रविद्भिर्महर्षिभिर्वेदागमपुराणवाक्यानि सम्यक्चिन्तितानि तत्परं तेभ्यः
सर्वसम्मत्या निर्णीतं यद्धनुमत्परोऽपरो वा देवो नास्ति ||

मन्त्र का दर्शनानुभव करने वाले ऋषि होते हैं, उनमें भी जो अधिक श्रेष्ठ हैं, वे महर्षि हैं | शास्त्र को जानने वाले उन महर्षियों के द्वारा वेड, आगम एवं पुराण के वाक्य अच्छी प्रकार से चिन्तन किये गए और उसके बाद उन महर्षियों के द्वारा सर्वसम्मति से यह निर्णय दिया गया कि हनुमान् के अतिरिक्त या उनसे श्रेष्ठ कोई और देवता नहीं है |

श्रीसुदंष्ट्रः

मङ्गलं हनुमन्नित्यं मङ्गलं कपिपुङ्गव |
मङ्गलं चाञ्जनासूनो मङ्गलं राघवप्रिय ||२०||

मर्कटभाष्यम्

हनुप्रदेशे शक्रवज्रताडितो भूत्वा छिन्नोत्थितहनुं धारयन् हनुमान् बभूव |
स्वज्ञानबलसिद्धिप्रभावेण कपिसङ्कुले महत्तां लब्ध्वा कपिपुङ्गवो बभूव |
शिवेनाहितो गिरिजागर्भः स्खलितो भूत्वा पावकक्षेत्रे प्रविष्टस्तं कललांशं
गृहित्वानिलः फलाकृतिनाञ्जनाहस्ते ददौ | तं परिभक्ष्य सासङ्गतापि गर्भिणी

बभूव रुद्रांशं सुषुवे तस्मादञ्जनासूनुः | नानापरिस्थितिषु
श्रीरामकार्यसम्पादननायको भूत्वा राघवप्रियतां लब्धवानेभिरुपलक्षणैर्हनुमतः
प्रभावं विचिन्त्य तस्य मङ्गलानुशासनं वदेत् |

ठुड्डी में इन्द्र के वज्रप्रहार के कारण टूटी एवं फूली हुई कपोलमण्डला को धारण करने से हनुमान् नाम वाले हुए | अपने ज्ञान, बल एवं सिद्धि के प्रभाव से वानरों के समूह में महानता को प्राप्त करके वे कपिपुङ्गव बने | शिव जी के द्वारा स्थापित पार्वती का गर्भ स्खलित होकर अग्नि में प्रविष्ट हो गया जिसके एक अंश को वायुदेव ने अर्धविकसित अवस्था में ले, फल का आकार देकर अंजना देवी के हाथों में दे दिया | उसका भक्षण करके बिना सम्भोग के ही वे गर्भिणी हुईं एवं रुद्र के उस अंश को जन्म दिया जिससे हनुमान् जी अंजनासूनु हुए | विभिन्न परिस्थितियों में श्रीराम जी के कार्यों को पूरा करने में अग्रणी होकर वे रामजी के प्रिय हो गए | इस प्रकार की उपाधियों के माध्यम से हनुमान् जी के प्रभाव का स्मरण करके उनके मंगलानुशासन का उच्चारण करे |

श्रीऋषभः

करुणारसपूर्णाय जगदानन्दहेतवे |
कुक्षिस्थाखिललोकाय हनुमद्ब्रह्मणे नमः ||२१||

मर्कटभाष्यम्

आनन्दाध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते आनन्देन जातानि जीवन्तीति श्रुतिवचनेषु जगतः सृष्टिस्थितिप्रलयहेतुभूतमानन्दतत्त्वमस्ति तद्धेतुभूतो हनुमान् | आनन्दागारहेतुना तस्य तत्त्वकुक्षौ सर्वे लोकाः समाश्रिताः स

भक्तक्लेशनिवारणदक्षः कारुण्यपूर्णो ब्रह्मरूपी हनुमान् मया नमस्क्रियते |

आनन्द से ही समस्त लोक उत्पन्न होते हैं एवं आनन्द में ही संजीवित रहते हैं, इस प्रकार के वेदवचनों में संसार की उत्पत्ति-स्थिति-विनाश का कारण आनन्द नामक तत्त्व बताया गया है, उस आनन्द के हेतु हनुमान् जी हैं | आनन्द के भण्डार होने से उनके तात्त्विक उदर में सभी लोक स्थित रहते हैं | भक्त के कष्टनिवारण में दक्ष, करुणा से भरे हुए ब्रह्मरूपी वे हनुमान् मेरे द्वारा नमस्कार किये जाते हैं |

श्रीपृथुः

दाता दापयिता चैव लोकानां रक्षकस्तथा |
प्रेरकश्चानुमन्ता च कर्ता भोक्ता कपीश्वरः ||२२||

*पाठभेदः – संवाहात्रक्षकस्तथा

मर्कटभाष्यम्

यथेप्सितफलं यो ददात्यन्येभ्यो राजदेवतत्त्वेभ्यश्चापि दापयति, लोकाञ्जनानां वा कष्टगर्गरपतनकाले यस्त्रायते स कपीश्वरो हनुमानेव | भोक्ता भोग्यं प्रेरितारञ्च मत्त्वेत्युपनिषत्सु त्रिविधं ब्रह्मवर्णनम् | कर्तृणां कर्मकर्ता फलभोक्ता प्रेरकश्च सहयोगानुमोदकश्चापि कपीश्वरो हनुमानेव |

जो अभीष्ट फल को देते हैं एवं अन्य राजतत्व, देवतत्व आदि से दिलाते भी हैं, संसार एवं लोगों को कष्ट के भंवर में गिरते समय जो उनकी रक्षा करते हैं, वे वानरों के स्वामी हनुमान् जी ही हैं | भोक्ता, भोग्य एवं प्रेरक मानते हुए उपनिषदों में तीन प्रकार से ब्रह्म का वर्णन किया गया है | कर्ताओं के कर्म के कर्ता, कर्मफल के भोक्ता, प्रेरणा देने वाले तथा सहयोग एवं अनुमोदन करने वाले भी वे वानरों के स्वामी हनुमान् जी ही हैं |

श्रीजाम्बवान्

भुक्तिमुक्तिप्रदं नाम विहाय हनुमन्तव |
संसरन्ति जना मूढाः किं विचित्रमतः परम् ||२३||

मर्कटभाष्यम्

पूर्वे कृतयुगे पुरुषोत्तममासपूर्णिमावसरे धर्मदेवस्य-धर्मपत्नी भक्तिरिति नामा द्वे कन्ये जनयामास ते प्रेयसी श्रेयसी च बभूवतुः | पवित्राचरणेन सेवया च प्रेयसी सर्वैश्वर्यप्रदा बभूव भुक्तिरिति नाम्ना प्रसिद्धा | तस्याः सहजा श्रेयसी करुणया सुकर्मभिश्च जनानां श्रेयःकर्त्री बभूव मुक्तिरिति नाम्ना प्रसिद्धा | ते भुक्तिमुक्ती यद्ददाति तद्धनुमन्नाम | ईदृशं लोककल्याणप्रदं नाम विहाय नानालोभप्रपञ्चसङ्क्षेषु मोहग्रस्तजना भ्रमन्ति किमतो विचित्रम्?

पूर्वकाल के सत्ययुग में पुरुषोत्तममास की पूर्णिमा आने पर धर्मदेव की भक्ति नाम वाली धर्मपत्नी ने दो कन्याओं को जन्म दिया जिनका नाम प्रेयसी एवं श्रेयसी हुआ | अपने पवित्र आचरण एवं सेवाभाव के प्रताप से प्रेयसी सभी ऐश्वर्यों को देने वाली हुई एवं उनका भुक्ति, ऐसा नाम प्रसिद्ध हुआ | उनके साथ उत्पन्न हुई श्रेयसी अपनी करुणा एवं अच्छे कर्मों के द्वारा लोगों का कल्याण करने वाली हुई एवं उनका मुक्ति, ऐसा नाम प्रसिद्ध हुआ | उन दोनों भुक्ति- मुक्ति को जो देने वाला है, वह हनुमान् जी का नाम है | इस प्रकार के लोककल्याणकारी नाम को छोडकर मोहग्रस्त लोग अनेकों प्रकार के लोभ एवं पाखण्ड के समूहों में भटकते रहते हैं, इससे विचित्र बात क्या होगी ?

श्रीज्योतिर्मुखः

मत्प्रार्थनाफलमिदं मम जन्मनश्च नेच्छामि किञ्चिदपरं हनुमन्महात्मन् |
त्वद्दासदासजनपादरजोनिकेतमस्मद्धितम्भवतु सेवकपारिजात ||२४||

मर्कटभाष्यम्

भो महात्मन् ! सेवकानामिच्छापूरणे कल्पद्रुमवदुदारबुद्धे ! स्वर्गस्था देवा अपि भारते जन्म प्राप्तुमिच्छन्ति | एतद्दुर्लभतमं जन्म लब्ध्वा कृतायाः प्रार्थनायाः परिणामञ्जन्मनश्चापीत्थमेवेप्सामि यत्तवदासानुदासानामङ्घ्रिपद्मपरागकेतनम्मम हितायास्त्वपरं किञ्चिदपि न कामय इति प्रार्थना |

हे महात्मा ! सेवकों की इच्छा पूर्ति करने में कल्पवृक्ष के समान उदार बुद्धि वाले ! स्वर्ग में स्थित देवता भी भारत में जन्म प्राप्त करने की इच्छा करते हैं | इस प्रकार के अत्यन्त दुर्लभ जन्म को प्राप्त करके, इसके माध्यम से की गयी प्रार्थना एवं इस जन्म का परिणाम की यही कामना करता हूँ कि आपके सेवकों के जो सेवक हैं, उनके चरणकमल के पराग (चरणरज) की मेरे हित के लिये मेरा आश्रय हो, इसके अतिरिक्त मैं और कुछ कामना नहीं करता हूँ, ऐसी यहाँ पर प्रार्थना की गयी है |

श्रीसुमुखः

रसने रससारज्ञे मधुरास्वादकाङ्क्षिणि |
हनुमन्नामपीयूषं सर्वदा रसने पिब ||२५||

मर्कटभाष्यम्

रसस्तु रसनाग्राह्यो मधुरादिरानेकधेति भाषापरिच्छेदे तस्माद्रसना रसज्ञा नित्यं

रुचिकरं स्वादुरसावलेहनतत्परा भवति | रसानाममृतं श्रेष्ठं दुग्धघृतसिन्धुजमधून्यमृतसंज्ञानि | तेष्वपि हनुमतो नामरूपिणोऽमृतस्य श्रेष्ठत्वमतुल्यमस्ति | तस्माद्रससारज्ञे रसने ! हनुमन्नामामृतमास्वादयोच्चारय |

रस रसना के द्वारा ग्रहण किया जाता है जो मधुर आदि अनेकों प्रकार का होता है, ऐसा भाषापरिच्छेद में वर्णित है, अतएव रसना को रसज्ञा कहते हैं जो प्रतिदिन प्रिय लगने वाले स्वादिष्ट रसों को चखने के लिए तत्पर रहती है | रसों में अमृत श्रेष्ठ है | दूध, घी, समुद्रमंथन से निकली सुधा, मधु आदि को अमृत कहते हैं | उनमें भी हनुमान् जी का जो नामरूपी अमृत है, उसकी श्रेष्ठता अतुलनीय है | अतएव हे रसों का ज्ञान रखने वाली जिह्वा ! तुम हनुमान् जी के नामामृत का पान करो, उसका उच्चारण करो |

श्रीगोलाङ्गूलः

कुतो दुर्दिनं वा कुतो भौमवारः कुतो वैधृतिस्तस्य भद्रा कथं वा |
कुतो वा व्यतीपातदोषक्षुतं वा हनूमत्पदध्यानवीताशुभस्य ||२६||

मर्कटभाष्यम्

दुर्दिनमसौभाग्यकरं भवति | भौमवारो बालारिष्टं प्रबलीकरोति | क्रान्तिसाम्यगते दुर्योगे वैधृतौ जायमानो बहुधा क्लिश्यते | भद्रादिभिः शुभकार्याणि विकृतफलानि भवन्ति | व्यतीपातजातः सङ्कटापन्नजीवनं भुङ्क्ते | छिक्काशकुनैः शुभाशुभमभूतमपि विद्धिर्ज्ञायते | किन्तु यच्चित्तं हनुमदङ्घ्रिसंलग्नं तमेते अशुभकर्तारश्चापि किञ्चिदपि न दुन्वन्ति | भौमवासरे मन्त्रस्यास्य हनुमद्ध्यानपरो भूत्वायुतजापी ग्रहबाधाभिर्विमुच्यत इति मे (भाष्यकारस्य) मतम्|

दुर्दिन सौभाग्य की हानि करता है | मंगलवार बालारिष्ट को प्रबल करता है | क्रान्तिसाम्य में पड़ने वाले दुर्योगों में विशेषकर वैधृति में जन्म लेने वाला बहुत प्रकार से कष्ट पाता है | भद्रा आदि के कारण शुभकार्य भी विकृतफल को देने लगते हैं | व्यतीपात योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति संकट से युक्त जीवन को भोगता है | छींक आदि शकुनों के द्वारा विद्वान् जन भविष्य के शुभाशुभ को जान लेते हैं | किन्तु जिसका चित्त हनुमान् जी के चरणों में लगा हुआ है, उसका ये सभी अशुभकारक योग कुछ भी कष्ट नहीं दे पाते हैं | मङ्गलवार को इस मन्त्र का हनुमान् जी का ध्यान करते हुए दस हज़ार की संख्या में जप करने वाला व्यक्ति ग्रहबाधाओं से मुक्त होता है, ऐसा मेरा (भाष्यकार का) मत है |

श्रीकुमुदः

त्रातारो भुवि पादाश्च मार्गाश्च रसने त्वया |
हनुमन्निर्मितास्सन्ति जनानां हीनता कुतः ||२७||

मर्कटभाष्यम्

गमनक्रियाहेतुभूताः पादा गमनाधारमार्गाश्च हनुमता निर्मितास्तस्मात्पन्थानं रक्षन्ति | मृगादिभिर्वृता मार्गा, वन्या लघुपर्वताः पादा निर्जना भवन्ति | तत्र गच्छतां जनानामपि तेऽरण्यक्लेशेभ्यो रक्षन्ति | कथमिति ? रसने ! तव हनुमन्नामकीर्तनकर्मणः प्रभावेण त्राणं कर्तुमेते हनुमता निर्मिताः सन्ति | ये हनुमत्कृपया जीवनं नियोजयन्ति तेषां किञ्चिदप्यपकारः कुतः सम्भवेदित्यर्थः | प्रयाणकाले मन्त्रस्यास्य हनुमद्ध्यानपरो भूत्वा सहस्रजापी स्वस्तिमार्गो भवतीति मे (भाष्यकारस्य) मतम् |

चलने की क्रिया में कारण - पैर तथा चलने के आधार – मार्ग, से हनुमान् जी के द्वारा बनाये गये हैं, अतएव यात्रियों की रक्षा करते हैं | हिरणों से आवृत्त जंगलों से भरी हुई पहाड़ियां निर्जन होती हैं | वहां जाने वाले लोगों की भी वे वन्य कष्टों से रक्षा करती हैं | ऐसा कैसे होता है ? हे जिह्वा ! तुम जो हनुमान् जी के नाम का उच्चारण करती हो, उस कर्म के प्रभाव से, रक्षा करने के लिये ये सब हनुमान् जी के द्वारा बनाये गये हैं | जो लोग हनुमान् जी की कृपा से जीवन का नियोजन करते हैं, उनका किसी भी माध्यम से अशुभ कैसे हो सकता है ? ऐसा अर्थ है | यात्रा के समय इस मन्त्र का हनुमान् जी का ध्यान करते हुए एक हज़ार की संख्या में जप करने वाला व्यक्ति यात्रा के मार्ग में कल्याण को प्राप्त करता है, ऐसा मेरा (भाष्यकार का) मत है |

श्रीशतबलिः

धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि पुण्योऽस्मि महतोऽस्म्यहम् |
हनुमत्त्वत्पदाम्भोजसेवाविभवयोगतः ||२८||

मर्कटभाष्यम्

हनुमन् ! तव चरणाम्बुजसेवासिद्धिफलं स्वजीवने लब्ध्वात्मानं धन्यं कृतज्ञं शुचिभिरावृतं महत्पदस्थितञ्चापि मन्ये |

हनुमान् जी ! आपके चरणकमलों की सेवारूपी सिद्धि के फल को अपने जीवन में प्राप्त करके मई स्वयं को धन्य, कृतज्ञ, शुभत्व से युक्त एवं महान् पद पर स्थित समझता हूँ |

श्रीकेसरः

त्वत्तोऽन्यः शरणं नास्ति त्वमेव मम रक्षकः |
अतो मयि कृपादृष्ट्या हनुमन्रक्ष मां सदा ||२९||

मर्कटभाष्यम्

त्वां विहायान्यदेवं शरणोपयोगिनं न मन्ये | त्वदन्यो देवश्चापि मम रक्षोत्सुको नास्ति तस्मात्त्वमेव मम शरणं रक्षकश्च | हनुमन् ! मां संरक्षन् सदा ममोपर्यनुग्रहपूर्णदृष्ट्यावलोकयतु | सङ्कटे मन्त्रस्यास्य हनुमद्ध्यानपरो भूत्वायुतजापी संकटाद्विमुच्यत इति मे (भाष्यकारस्य) मतम् |

आपको छोडकर मैं किसी और देवता को शरण ग्रहण करने योग्य नहीं समझता हूँ | साथ ही आपके अतिरिक्त कोई और देवता मेरी रक्षा करने को उत्सुक नहीं है अतएव आप ही मेरे शरणदाता एवं रक्षक हैं | हे हनुमान् ! मेरी रक्षा करते हुए आप सदैव मेरे ऊपर अनुग्रह से भरी दृष्टि के माध्यम से अवलोकन करते रहें | संकट के समय इस मन्त्र का हनुमान् जी का ध्यान करते हुए दस हज़ार की संख्या में जप करने वाला व्यक्ति संकट से मुक्त होता है, ऐसा मेरा, भाष्यकार का मत है |

श्रीमारीचः

सदा पापौघनिष्ठ्यूतं पापेषु हृष्टमानसम् |
पापात्मानं महापापं रक्ष मां हनुमत्प्रभो ||३०||

मर्कटभाष्यम्

प्रभो हनुमन् ! पापसङ्घे निमग्नं पापकर्मणि प्रसन्नमनसोत्सुकं मां पापावृत्तचित्तं

पापपरायणकलेवरं पापेभ्यः सर्वदा रक्ष |

हे हनुमान् प्रभु ! पाप के समूह में फंसे हुए, पाप कर्म में प्रसन्न मन से उत्सुकता रखने वाले, पाप से ढके हुए चित्त वाले, पाप में समर्पित शरीर वाले, मुझको पापों से आप सदैव बचायें |

श्रीतरुणः

हनुमदाज्ञया यच्च भावि तद्भवति ध्रुवम् |
यदभावि न तद्भावि वृथा देहपरिश्रमः ||३१||

*पाठभेदः - भावी

मर्कटभाष्यम्

तत्त्वाधिष्ठाता कालप्रणेता कर्मप्रेरकश्चापि हनुमान्, तस्येच्छया यद्भवितव्यं तदपरिहार्यमस्ति | यस्य भवितव्यता नास्ति तद्धनुमदिच्छामतिक्रम्य न भवति | एवं ज्ञात्वा नानाकाम्यभोगानां प्राप्तये कृतं कायकष्टप्रदपरिश्रमं वृथानुपयुक्तञ्च |

तत्त्वों के स्वामी, काल के प्रणेता एवं कर्म की प्रेरणा देने वाले हनुमान् जी ही हैं | उनकी इच्छा से जो होना है, उसे टाला नहीं जा सकता | जिसे घटित नहीं होना है, वह घटना हनुमान् जी की इच्छा के विरुद्ध जाकर घटित नहीं हो सकती | इस प्रकार से जानकर अनेकों प्रकार के काम्यकर्मों की प्राप्ति के लिये किया गया शरीर को कष्ट देने वाला परिश्रम व्यर्थानुपयोगी ही है |

श्रीगोमुखः

अपराधशतं नित्यं कुर्वाणं मां नृशंसकम् |
क्षमस्व दासबुद्ध्या त्वं हनुमन्करुणानिधे ||३२||

मर्कटभाष्यम्

हे करुणाशीलयुक्त हनुमन् ! दयाशीलोदारताप्रभृतिभिर्गुणैर्हीनः शतेन पापापराधैर्लिप्त एष मम दासोऽस्तीति मत्वा ममापराधान् क्षमस्व |

हे करुणामय व्यवहार से युक्त हनुमान् ! दया, शील, उदारता आदि गुणों से हीन, सैकड़ों पापों एवं अपराधों से लिप्त यह व्यक्ति मेरा सेवक है, ऐसा मानकर मेरे अपराध क्षमा करें |

श्रीपनसः

हनुमतो न परं परमार्थतो हनुमतो न परं परमार्थतः |
इति वदामि जनान् परमार्थतो न हि परं भवितात्र विचक्षणः ||३३||

मर्कटभाष्यम्

यूथपः पनस आख्याति यदहं जनान् परमार्थतो मोक्षबुद्ध्या वदामि हनुमत्तत्त्वतः परं श्रेष्ठं नास्तीति किञ्चित् संसारे हनुमतः परो ज्ञानी विशालमतिश्चाप्यपरो नास्तीत्यर्थः |

यूथपति पनस कहते हैं कि मैं परमश्रेष्ठ तत्त्व के अनुसार मोक्ष को देने वाली बुद्धि के आधार पर लोगों को कहता हूँ कि हनुमान् जी के तत्त्व से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है | संसार में हनुमान् जी से बड़ा ज्ञानी एवं विशाल बुद्धि वाला दूसरा कोई नहीं है, ऐसा अर्थ है |

पीठिका

परमाक्षरसूत्रेषु सूत्रविस्तारभाष्यलेखनान्नगाहानन्तरं निग्रहाचार्यो विचित्रस्वप्नं ददर्श। कापि बालिका नवजातं पद्भ्यां बध्वाकर्षयतीत्यवलोक्य स मुच्यतां मुच्यतां होवाच। साब्रवीन्नैवं करिष्ये दोषिणं मोचयैनं यदि ते सामर्थ्यमस्ति। प्रत्युवाच निग्रहो नास्ति लोके जनः कोऽपि निर्दोषो निर्गुणस्तथा। कर्मप्रारब्धजन्यानां गुणदोषौ समन्वितावेति। स्वशक्त्याक्षमो निग्रहस्तदा बह्वृचोपनिषन्मन्त्रैस्तामाराध साब्रवीत्ते प्रसन्नास्मि भूयास्त्वं ब्रह्मविदां वरिष्ठ इत्यन्तर्हिता बभूव। पुनः सप्ताहानन्तरं रुद्रेश्वरीं प्रति गत्वा ननाम श्रीपञ्चम्यां निग्रहाचार्यो समासेन सूर्यगीताया मार्तण्डभाष्यञ्चकारानन्तरं वानरगीतायां मर्कटञ्चापि।

परमाक्षर सूत्रों पर सूत्रविस्तार भाष्य के लेखन के एक सप्ताह के बाद निग्रहाचार्य ने एक विचित्र स्वप्न देखा। कोई बालिका एक नवजात को पैरों से बांध कर घसीटती हुई ले जा रही है, यह दृश्य देखकर निग्रह ने 'इसे मुक्त कर दो, मुक्त कर दो', ऐसा कहा। उस बालिका ने कहा, 'मैं ऐसा नहीं करूंगी, यदि तुझ में सामर्थ्य है तो इस दोषी को मुक्त कर दो।' निग्रह ने उत्तर दिया कि इस संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो पूर्णतया गुण या दोष से रहित हो क्योंकि कर्मप्रारब्ध से उत्पन्न देहधारियों में गुण एवं दोष समन्वित रहते हैं। अपनी दैहिक शक्ति से उस नवजात शिशु को छुडाने में असमर्थ होने पर निग्रहाचार्य ने बह्वृचोपनिषत् के मन्त्रों से स्तुति की, तब उस बालिका ने कहा कि मैं तुम पर प्रसन्न हूँ, तुम ब्रह्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ बनो। इसके बाद वह बालिका अन्तर्धान हो गयी। पुनः एक सप्ताह के बाद रुद्रेश्वरी देवी के पास जाकर निग्रहाचार्य ने उन्हें प्रणाम किया एवं श्रीपंचमी के दिन समासशैली से सूर्य गीता के मार्तण्ड भाष्य का लेखन किया एवं उसके बाद वानर गीता पर मर्कटभाष्य का भी लेखन किया।

*****

फलश्रुतिः

इतीदं वानरप्रोक्तं सर्वपापहरं वरम् |
सर्वज्ञानप्रदं चैव सर्वसौभाग्यवर्धनम् ||

इस प्रकार से वानरों के द्वारा कहा गया यह श्रेष्ठ, सभी पापों का हरण करने वाला, सभी ज्ञानों को देने वाला एवं सभी प्रकार के सौभाग्यों को बढाने वाला (गीताशास्त्र) है |

*****

|| इति निग्रहाचार्येण श्रीभागवतानंदगुरुणा
मर्कटभाष्यसहिता श्रीवानरगीता सम्पन्ना ||

| इस प्रकार निग्रहाचार्य श्रीभागवतानंद गुरु के द्वारा
मर्कटभाष्य के साथ श्रीवानरगीता सम्पन्न हुई |